# कलीसिया अध्याय 4

| | |
|---|---|
| 1. | **प्रार्थना** |

**समूह अगुवा।** परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज सुनने के लिए **प्रार्थना** करे।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

| | |
|---|---|
| 2. | **बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]*<br>**मरकुस 11:20-14:72** |

**अपनी बारी** आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (मरकुस 11:20-14:72) में शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

| | |
|---|---|
| 3. | **याद करना** (5 मिनट) *[मसीह चरित्र]*<br>**(4) रोमियों 4:20-21** |

**दो दो करके पुनरावलोकन करें।**

**(3) विश्वास : रोमियों 4:20-21**। और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर सन्देह किया, पर विश्वास मे दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है वह उसे पूरी करने को भी सामर्थ्यी है।

| | |
|---|---|
| 4 | **बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]*<br>**यूहन्ना 1:1-18** |

एक साथ मिलकर समूह में बाइबल पढ़ने का उद्देश्य यीशु मसीह तथा एक दूसरे के साथ रिश्ते को मज़बूत करना है। यह अध्ययन बाइबल का ज्ञान व समझ प्राप्त करने में एक दूसरे की सहायता करने तथा उससे मिले प्रकाशनों को अपने जीवन में इस्तेमाल करने के लिए है।

इस कारण यह अति महत्वपूर्ण है कि समूह के सदस्य एक दूसरे को चर्चा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें। समूह के सभी सदस्यों की प्रतिभागिता महत्वपूर्ण है। यदि किसी के द्वारा कही कोई बात पूरी तरह से सही साबित नहीं होती (शास्त्र के आधार पर)तो उसे समूह से बाहर नहीं कर देना चाहिए। वरन समूह के अगुवे को समूह के सभी सदस्यों को बाइबल के सत्यों को खोजने और उन पर चर्चा करने के लिए उत्साहित करना चाहिए। समूह के हर एक व्यक्ति को महसूस होना चाहिए कि जब वह बोलता है तो दूसरे लोग उसकी सुनते,उसे गम्भीरता से लेते और उसकी बातों को स्वीकार करते हैं। समूह के सदस्य बाइबल के ज्ञान को लेकर आपस में प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर रहे हैं,वरन वे एक दूसरे को बढ़ने और आत्मविश्वास के साथ अपनी बातें साझा करने में प्रोत्साहित करने के द्वारा प्रेम करते हैं।

नीचे दिया गया बाइबल अध्ययन का उदारहण समूह के अगुवे की बाइबल अध्ययन की तैयारी करने में सहायता करने या कठिन प्रश्नों पर चर्चा करने में सहायता करने के लिए तैयार किया गया है। आपके सामुहिक चर्चा में सदस्यों की सामूहिक चर्चा ये भिन्न विषय व भिन्न प्रश्न हो सकते हैं

**यूहन्ना 1:1-18** पर एक साथ मिलकर अध्ययन करने के लिए पांच कदमों के बाइबल अध्ययन का इस्तेमाल करें।

**परिचय:** यूहन्ना अध्याय 1से 12 पढ़ें और उसे यीशु मसीह की सेवाकाई से जोड़ने का प्रयास करें। उसेने अपने आपको विस्तृत रूप में प्रगट किया, लेकिन अन्त में उसे अस्विकार कर दिया गया। यूहन्ना 1:1-14 में सृष्टि की रचना से पहले, सृष्टि के समय, पाप में गिरने के समय तथा देहधारण के दौरान,परमेश्वर के वचन की महिमा को प्रगट किया गया है,जब परमेश्वर ने मसीह के रूप में मानवीय स्वभाव धारण किया। यूहन्ना 1:15 से 2:12 दर्शाते हैं कि वचन अर्थात यीशु मसीह ने अपने आपको यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और प्रारम्भिक चेलों पर प्रगट किया।

**कदम 1 .पढ़ें.** **परमेश्वर का वचन**

**पढ़ें,** आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 1:1-18 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

**कदम 2. खोजें .** **अवलोकन**

**ध्यान दें।** इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

**लेखा।** प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

**साझा करें।** (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

1:12-13

**खोज 1. परमेश्वर की सन्तान बनना।**

यूहन्ना 1:12-13 में लिखा है "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया है,उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया है अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं। वे न तो (वास्तव में)लहू (प्राकृतिक वंश में) से, न (वास्तव में)शरीर की(काम वासना) इच्छा से न मनुष्य की इच्छा से (स्वेच्छा)परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं। ये वचन मुझे बताते हैं कि मैं कैसे परमेश्वर की सन्तान बन सकता हूँ।

परमेश्वर की सन्तान बनना परमेश्वर को सर्वश्रेष्ठ काम है। बाइबल हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि जो सच में यीशु मसीह पर विश्वास करता है वह परमेश्वर से जन्मा है(यूहन्ना 1:12-13)। जब कोई यह विश्वास करता है तो वह परमेश्वर की सन्तान बन जाता है(अर्थात वह नया जन्म पा लेता है):

- वह अपने स्वाभाविक वंश (ग्रीक : लहू) अर्थात अपनी राष्ट्रीयता के कारण नया जन्म नहीं पाता।उदाहरण: उदाहरण से जन्म लेना(यूहन्ना 8:31-59;लूका 3:8; गलातियों 3:11,28)
- अपने माता पिता के शारीरिक सम्बन्धों की वजह से नहीं(ग्रीक : शरीर की इच्छा से नहीं) (यूहन्ना 3:6)
- अपनी स्वतन्त्र इच्छा और निर्णयों के कारण नहीं (ग्रीक : मनुष्यों की इच्दा) (रोमियों 8:7-8;9:11,16)
- लेकिन केवल परमेश्वर ने जन्म लेने के द्वारा(ग्रीक : इग्नीथीसन) (ओरिस्ट, उदासीन)(यूहन्ना 3:3-8;यूहन्ना 17:2; रोमियों 8:29-30;इफिसियों 1:4-5)।

जो कोई सुसमाचार को सुनता है परमेश्वर की सन्तान बन सकता है। हालांकि यीशु मसीह ने संसार की रचना की, संसार में आये और लोगों के बीच में डेरा किया, कई लोगों ने उसका स्वागत व उन्हें स्वीकार नहीं किया। लेकिन बहुत से लोग हैं जिन्होंने उसे स्वीकार किया हैं। उसने लूका 2:34 में की गयी भविष्यद्वाणी को पूरा किया कि "यह बालक बहुत से लोगों के गिरने और बहुत से लोगों के उठने का कारण होगा।" केवल इस्राएल में नहीं वरन 1 पतरस 2:6-8 के अनुसार सारे संसार भर में। "वह ऐसा चिन्ह होने के लिए ठहराया गया है, जिसे के विरोध में बातें की जाएंगी, और इस से बहुत हृदयों के विचार प्रगट हो जाएंगे।" जब यीशु ने जो कोई कहा तो उसका अर्थ संसार के किसी भी देश या जाति के लोगों से था। यीशु मसीह केवल यीशु को बचाने के लिए ही नहीं आये,वरन वह दुनिया की सभी जातियों व देशों के लोगों के बचाने के लिए आये।

केवल यीशु मसीह में विश्वास करने वाले लोग ही परमेश्वर की सन्तान कहलाते हें। यीशु मसीह के "नाम में" विश्वास करने का अर्थ है कि हम उसे ठीक उस तरह मान्यता दें जिस तरह से उसने आपने आप को वचनों में प्रगट किय है।(वैसे नहीं जैसे दूसरे धर्म उसके बारे में कहते हैं।)कोई भी जन जो इन सत्यों को अपने हृदय में विश्वास के साथ जगह प्रदान करता है,वह यीशु मसीह को (मसीह की आत्मा को)अपने हृदय और आत्मा में स्वीकार करेगा। "ग्रहण करने" का अर्थ यीशु मसीह का *स्वागत करना,*उसे सार्वजनिक तौर पर मानना व उसका *अंगीकार* करना हैं कि वह उद्धारकर्ता व आपके भीतरी व बाहरी जीवन पर *अधिकारी* है।

यीशु उन्हें परमेश्वर की सन्तान "होने का" अधिकार देता है। जहां यहूदी खुद को "अब्राहम की सन्तान" कहलवान पसन्द करते हैं,वहीं यीशु ने विश्वासियों को "परमेश्वर की सन्तान" कहलाने का अधिकार व योग्यता प्रदान की है।
परमेश्वर की सन्तान बनने का अर्थ यह नहीं है कि विश्वासी केवल भविष्य में ही परमेश्वर की सन्तान बनते हैं। बल्कि इसका अर्थ है कि परमेश्वर के अकस्मात कार्य के द्वारा आप अभी परमेश्वर की सन्तान बन चुके हैं जिसे बाइबल में नया जन्म प्राप्त करना भी कहा जाता है। वे धर्मी ठहराये गये,क्षमा और अनन्त जीवन प्राप्त लोग हैं। अनका पद या उपाधि परमेश्वर की सन्तान कहलाना है।

लेकिन इसका अर्थ यह भी है कि उनके भीतर शुद्धिकरण की एक प्रक्रिया शुरू हो गयी है अर्थात वृद्धि की एक प्रक्रिया जिसके तहत वे अधिक से अधिक परमेश्वर की सन्तान का स्वरूप धारण करने लगते हैं(2कुरि.3:18)। परमेश्वर के सन्तान हाने की सर्वोच्च अनुभूति महिमामित होना कहलाता है। तब विश्वासी जन अपनी मानवीय आत्मा(1यूहन्ना 3:1-3) और मानवीय देह में (फिलि 3:20-21) होने के बावजूद भी यीशु मसीह के मानवीय स्वभाव में ढल जाएगें।

---

**1:16-17**

## *खोज 2:* व्यवस्था व अनुग्रह में मूल अन्तर

यूहन्ना 1:16-17 में लिखा है,"क्योंकि उसकी परिपूर्णता में से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह। इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई परन्तु अनुग्रह और सच्चाइ यीशु मसीह के द्वारा पहुँची।" पुराने नियम में नैतिक व आनुष्ठानिक विधियों तथा सामाजिक नियमों का मिश्रण होता था। व्यवस्था में कुछ गड़बड़ी नहीं थी। परमेश्वर ने ही ये नियम मूसा को दिये थे(स्वर्गदूतों के द्वारा बोले गये संदेश)(इब्रानियों 2:2)।इसका उद्देश्य, मसीह अर्थात यीशु मसीह को स्वीकार करने के लिए लोगों के हृदयों को तैयार करना था। व्यवस्था का उद्देश्य, मसीह अर्थात यीशु मसीह को स्वीकार करने के लिए लोगों के हृदयों को तैयार करना था।

- एक तरफ व्यवस्था ने लोगों पर उनके पापों और उनकी भटकी अवस्था को प्रगट किया।
- दूसरी ओर व्यवस्था ने परमेश्वर के उद्धार को छुपा लिया(उदाहरण के लिए,पशुबलि ने प्रायश्चित हेतू मसीह के बलिदान को छुपा लिया)

लेकिन दो काम व्यवस्था कभी नहीं कर सकी।

- व्यवस्था लोगों को उनके पापों से क्षमा व उसकी खोई अवसाा में उनकी सहायता नहीं कर सकी।
- व्यवस्था उन पर व्यवहारिक रूप से सच्चाई या वास्तविकता को प्रगट नहीं कर सकी, जिसकी ओर वे संकेत कर रहे थे।
- उदाहरण के लिए: व्यवस्था ने पुराने नियम के मन्दिर,याजकता,बलिदान इत्यादि का वास्तविक स्वभाव प्रगट नहीं किया, जो कि नये नियम में वास्तविकता बन कर प्रगट हुए(कुलु 2:17;इब्रानियों 10:1)।

केवल यीशु की मृत्यु व उसके पुनरूत्थान के द्वारा
दूसरी ओर"वह अनुग्रह जो पापों को क्षमा करता तथा खोई अवस्था में सहायता प्रदान करता है" मोल लेकर उपलब्ध करवा दिया।
दूसरी ओर व्यवस्था को पूरा करके "परमेश्वर के उद्धार की योजना का स्वभाव या सच्चाई को प्रगट किया"(उदाहरण:क्रूस पर दिया गया यीशु का बलिदान,पुराने नियमों के सारे बलिदानों की पूर्ति करता है।)

**कदम 3. प्रश्न.** **व्याख्या**

**ध्यान दें:** आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 1:1-18 में पायी जाने वाली सच्चाईयों का समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

**लिखें:** अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे। )

**चर्चा करें।**(उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

**1:1-3**

***प्रश्न 1:* "वचन कौन है और उसने क्या किया?"**

**नोट्स**

वचन यीशु का एक महत्वपूर्ण नाम है।

**( 1 ) यीशु मसीह को इसलिए वचन कहा गया क्योंकि उसने ही परमेश्वर को प्रत्यक्ष रूप से प्रगट किया।**

जब हम बोलते हैं तब हमारे शब्द हमारे भावों व अदृश्य विचारों को प्रगट करते हैं। इसी प्रकार से यीशु मसीह ने मनुष्यों पर परमेश्वर के भीतरी विचार व अदृश्य हस्ती को प्रगट किया। यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर का मनुष्यों के सीमित शब्दों तथा धरती की रचना में प्रत्यक्ष प्रतिरूप है(कुलु 1:15)।

केवल यीशु ही स्वर्ग में परमेश्वर पिता के साथ मौजूद थे और केवल वह ही परमेश्वर के विचारों,योजनाओं और वचनों को जानते हैं। हमें जो कुछ परमेश्वर व उसकी योजनाओं के बारे में पता करने की आवश्यकता थी उन्हें यीशु मसीह ने हम पर प्रगट किया।"कोई पुत्र को नहीं जानता केवल पिता;और कोई पिता को नहीं जानता केवल पुत्र;और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे"(मत्ती11: 25-27)।

**( 2 ) यीशु मसीह प्रभु है।**

यूहन्ना रचित सुसमाचार हमें बताता है कि यीशु मसीह प्रभु से कम नहीं है (इब्रानियों 1:3; 1यूहनना 5:20)। वह आदि में विद्यमान था और उसमें भी परमेश्वर पिता के समान ही स्वभाव पाया जाता है(मैनुएल 2 परिशिष्ठ 8। परमेश्वर का स्वभाव व परमेश्वर का पुत्र)।

**( 3 ) यीशु मसीह हमेशा परमेश्वर के साथ था।**

वह कभी रचा नहीं गया। इस बात पर अधिक जोर डालने के लिए कि यीशु की रचना नहीं हुई थी,पद 1 व 2 में क्रिया के नियमित जारी रहने वाले काल का इस्तेमाल किया गया है। वह सदा अनन्त काल से ही विद्यमान था। वह सर्वदा परमेश्वर पिता की सर्वाधिक सम्भव घनिष्ठता और संगति में था। प्रारम्भ से ही वह परमेंश्वर पिता की ओर से चुना हुआ जन था।

अत: यूहन्ना रचित सुसमाचार यीशु मसीह के बारे तीन सच्चाईयों को बयांन करता है।

- वह वास्तव में ईश्वरीय है।
- वह सदाकाल से विद्यमान है।
- वह परमेश्वर पिता की ओर से एक चुने हुए व्यक्ति के रूप में विद्यमन था,,जिसके साथ वह हमेशा संगति करना पसन्द करता है।

**( 4 ) यीशु मसीह ने ही सौर्यमण्डल को रचा।**

बिना किसी सन्देह के इस बात पर जोर डालने के लिए कि यीशु ने ही सारी चीजों को रचा था,पद 3 में क्रिया के सामान्य भूत तथा पूर्ण काल का इस्तेमाल किया गया है। "सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ(सामान्य काल), और जो कुछ उत्पन्न हुआ(सामन्य) है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई(पूर्ण काल)।" यीशु मसीह ने अनगिनत सितारों,सूरज, चांद और अर्थ के साथ सम्पूर्ण तारामण्डल व मनुष्यों का निर्माण किया।

---

**1: 4-5**

***प्रश्न 2.* यीशु मसीह "जीवन" और "ज्योति " है का क्या मतलब है।**

**नोट्स**

"उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।"(यूहन्ना 1:4)। यीशु मसीह को "जीवन" कहा जाता है क्योंकि उसमें परमेश्वर के सारे गुण व विशेषताएं विद्यमान थी। वह सच में परमेश्वर है। और उसे 'ज्योंति' इसलिए कहा गया क्योंकि उसने प्रत्यक्ष में परमेश्वर के इन गुणों को प्रगट किया। यीशु मसीह ने ही मनुष्यों पर प्रत्यक्ष रूप में परमेश्वर को प्रगट किया।

इस तथ्य पर और गहराई से ज़ोर डालने के लिए वह 'ज्योति' यीशु मसीह में आदि से वास करती है,पद 4 में क्रिया के अपूर्ण भूलकाल का इस्तेमाल किया गया है:"था"। 'जीवन' परमेश्वर की परिपूर्णता का,उसके महिमित विशेषताओं,उदाहरण के लिए उसके

सत्य, उसकी सर्वशक्तिमान सामर्थ्य, हर जगह पर उसके मौजूद होने,उसकी पवित्रता, उसके प्रेम, उसकी श्रेष्ठता आदि गुणों का निचोड़ है। यह जीवन सृजे गये और आत्मिक जीवन दोनों का ही स्रोत है। वह मनुष्यों को प्रदान किये गये सामान्य व विशेष प्रकाशन का आधार है।

जब यह जीवन प्रत्यक्ष रूप में प्रगट किया गया, तो वह "ज्योति" कहलाया। अत: यीशु मसीह परमेश्वर व परमेश्वर के गुणों (ईश्वरीय विशेषताओं) का प्रत्यक्ष प्रकाशन (भाव) है। (यूहन्न 14:9;कुलु 1:15)। केवल यीशु मसीह द्वारा ही हम परमेश्वर को जान सकते व उसके प्रेम का अनुभव कर सकते हैं। पुराने नियम में मसीह को भविष्यद्वाणियों, प्रतिज्ञाओं और दृष्टान्तों(परछाईयों)में उस प्रकाश के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। उदाहरण के लिए, फसह का मेमना यीशु मसीह द्वारा किये जाने वाले प्रायश्चित की ओर संकेत करता है जिसने हमारे पापों के विरूद्ध उठे परमेश्वर के धर्मी क्रोध को शान्त कर दिया। मन्दिर में प्रतिदिन चढ़ाई जाने वाली पशुबलि मसीह के लहू की ओर सकेंत करती है जो क्रूस पर बहाया गया और पापियों को उनके हर अधर्म से शुद्ध करता है। "बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं है"(इब्रानियों 9:22)। मरूस्थल में काठ पर लटकाया गया सांप भी यीशु मसीह की ओर संकेत करता है जो क्रूस पर लटकाया गया था। मसीह न केवल पुराने नियम में वरन हमें सम्पूर्ण नये नियम में भी बहुतायत से दिखाई देता है। उसने कहा, "जिसने मुझे देख लिया, उसने पिता को देख लिया"। यीशु मसीह ने अपने स्वभाव, बातों और कार्यों से जो कुछ प्रगट किया वह अप्रत्यक्ष परमेश्वर का अंश था।

---

**1:9**

**प्रश्न 3. किस तरह से यीशु मसीह हर एक व्यक्ति को ज्योति (प्रदीप) बना देते हैं?**

***नोट्स।***

जब कोई व्यक्ति सुसमाचार सुनता है तो मसीह उसे प्रकाशित कर देते हैं। इस अर्थ है कि यीशु उसे आत्मिक समझ का एक उच्च स्तर प्रदान करते हैं। हो सकता है कि व्यक्ति को बोध होने लग जाये कि परमेश्वर के विद्यमान है। या हो सकता है कि वह समझ जाए कि वह अन्धकार में जीवन व्यतीत कर रहा है। (किसी दूसरे ईश्वर या देवताओं पर विश्वास करता है या गुलामी की एक या अन्य अवस्थाओं में जीवन व्यतीत कर रहा है)। या फिर उसको यह समझ में आ जाए कि परमेश्वर ने हर एक विश्वास करने वाले के लिए उद्धार का एक रास्ता तैयार किया है।

परन्तु यह आवश्यक नहीं है इस प्रकार के ज्ञान,समय या बोध होने से किसी का उद्धार हो ही जाए। सन्दर्भ हमें बताता है कि हर एक जन का उद्धार नहीं हुआ है।

- पद 5 में लिखा है कि हर एक जन ने ज्योति को न "समझा"या "पहिचाना"(उस पर भरोसा किया)।
- पद 10 में लिखा है कि हर एक जन ने ज्योति को "स्वीकार" या "ग्रहण" नहीं किया।
- पद 11 में लिखा है कि हर एक जन ने ज्योति को "ग्रहण" नहीं किया।

बहुत से लोग सुसमाचार तो सुनते हैं परन्तु उसे स्वीकार (ग्रहण) नहीं करते, क्योंकि वे अन्धकार में रहना पसन्द करते हैं(यूहन्ना 3:19-21)। परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से बहुत से ऐसे लोग हैं जो यीशु को अपने उद्धारकता और प्रभु के रूप में स्वीकार कर लेते हैं और निश्चय ही उद्धार पाये हुए हैं(यूहन्ना 1:12-13;1यूहन्ना 5:11-13)। यूहन्ना रचित सुसमाचार हमें सार्वभौमिक प्रायश्चित की शिक्षा नहीं देता(अर्थात वह शिक्षा कि हर एक जन का उद्धार हो चुका है)। परन्तु वह हमें उद्धार का निश्चय प्रदान करता है,अर्थात अगर किसी व्यक्ति का एक बार उद्धार हो गया तो वह हमेशा सुरक्षित बना रहेगा।

---

**1:10**

***प्रश्न 4. "संसार" से उसका क्या मतलब है?***

***नोट्स***

यूहन्ना रचित सुसमाचार में शब्द "संसार" (ग्रीक: कोसमोस) के अनेकों अर्थ हैं।

**(1) क्रम से बनायी गयी सृष्टि के रूप में संसार।**

(यूहन्ना 1:10,17:5,14)या पृथ्वी (यूहन्ना 21:25)।

**(2) मानवीय इतिहास की रंगशाला रूपी संसार।**

यह मनुष्यों का राज्य, धरती पर रहने वाले लोग, मानवजाति है। (यूहन्ना 1:9, 10; 3:19; 9:39; 11:27; 12:46; 14:31; 16:21,28;17:18; 18:36-37)।

---

1ग्रीक: काटालाम्बानों

2.ग्रीक : गीनास्को

3.ग्रीक : पारालाम्बानो

**( 3 ) सामान्य लोगों के रूप में संसारं**

(यूहन्ना 7:4; 14:22)

**( 4 ) भटके हुए लोगों के स्थान के रूप में संसारं।**

यह संसार परमेश्वर के जीवन से पृथक, पाप से भरा, परमेश्वर के दण्ड का हकदार और उद्धार की आवश्यकता में है(यूहन्ना 1:10;3:19)। इस अर्थ को छठे अर्थ के साथ भी जोड़ा जा सकता है।

**( 5 ) सारे देशों से आये लोगों से मिलकर बना संसार।**

यह खोये हुए लोगों का संसार है(जैसा कि यूहन्ना 3:19 में अतिरिक्त विचारों के साथ लिखा है) जिसमें सभी जाति, राष्ट्रों और भाषाओं के लोग शामिल है(यूहन्ना 4:42) जो प्रत्येक जन के बारे में लिखी हुई बातों को नहीं मानते(यूहन्ना 1:29; 3:16;; 3:17; 4:42;6:33;,51;8:12; 9:5; 11:52; 12:32; 1यूहन्ना 2:2; 4:14-15)। यूहन्ना कहता है कि यीशु परमेश्वर का मेमना है जो संसार के पापों को अपने ऊपर उठा लिये जाता है। यहां पर संसार का अर्थ "वे सभी लोग नहीं हो सकते जिन्होंने अभी तक संसार में जन्म लिया है" क्योंकि बाइबल हमें यह नहीं बताती कि सभी लोगों का उद्धार हो जाएगा। यूहन्ना 3:16 में लिखी बातों का अर्थ यह है कि परमेश्वर सभी जाति, राष्ट्रों और भाषाओं के लोगों को यह जानते हुए भी प्रेम करता है कि वे प्रत्येक जन के बारे में लिखी हुई बातों को नहीं मानते(भजन 5:4-6; 11:5; लूका 14:26; रोमियों 1:18; 9:13; इब्रानियों 1:9; याकूब 4:4)।

**( 6 ) यह संसार शैतान का क्षेत्र है।**

यह संसार ऐसे भटके हुए लोगों से भरा हुआ संसार है जो बुरा करते तथा परमेश्वर,मसीह और मसीहियों के खिलाफ रहते हैं(यूहन्ना 7:7; 8:23;12:31,ध्यान रहे कि यीशु के प्रथम आगमन पर शैतान से उसके अधिकार को छीन लिया गया है; 14:17,30,31;15:18;17:9;14-16,25;1यूहन्ना 5:19, 18वें वचन पर ध्यान दें कि शैतान नया जन्म पाये हुए मसीहियों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

**( 7 ) परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में संसार ।**

सारे राष्ट्रों से परमेश्वर के चुने हुए लोग(यूहन्ना 4:42; 1 यूहन्ना 4:14)।

इसलिए हमारे लिये यह जानना बहुत जरूरी है कि बाइबल में शब्द "संसार" के बहुत से अर्थ हैं।

---

1:14

## प्रश्न 5. 'शरीर' शब्द का अर्थ क्या है?

**नोट्स**

यूहन्ना रचित सुसमाचार में शरीर शब्द के अनेकों अर्थ हैं।

**( 1 ) एक मानवीय देह, अर्थात एक मनुष्य।**

यूहन्ना 1:13-14 में लिखा है कि," एक विश्वासी परमेश्वर से जन्मा होता है शरीर से नहीं"। यहां पर "शरीर" का अर्थ मनुष्य से है, जिसमें मानवीय स्वभाव तो है परन्तु नकारात्मक सोच नहीं है। नया जन्म प्रारम्भ से लेकर अन्त तक किसी मनुष्य का काम नहीं वरन परमेश्वर का काम है! यूहन्ना 1:14 में यह भी लिखा है कि"यीशु ने देहधारण किया"। यहां पर भी "शरीर" का अर्थ है कि मनुष्य में मानवीय स्वभाव तो है परन्तु नकारात्मक सोच नहीं है। अत: यीशु पापरहित होने के बावजूद, मनुष्य की प्राकृतिक कमजोरियों, थकान,दर्द, विपत्ती और मृत्यु के अधीन था, क्योंकि जब तक मनुष्य जाति को पापों से छुटकारा देने के लिए फिरौति की रकम का भुगतान नहीं कर दिया गया तब तक मनुष्य का स्वभाव पापों के श्राप से दबा हुआ था।

**( 2 ) पापमय मानवीय स्वभाव के रूप में शरीर।**

यूहन्न 3:6 में लिखा है की,"जो शरीद से जन्मा है वह शरीर है और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है।" यहां पर "शरीर" का अर्थ मानवीय स्वभाव से है जो पापमय इच्छाओं के लिए एक वाहन या किसी कुर्सी के समान है; यह भाव प्रगट करता है कि मनुष्य स्वभाव से ही ऐसा होता है। प्रेरित पौलुस कई बार इस बोध में होकर शरीर शब्द का इस्तेमाल करते हैं।

**( 3 ) यीशु के बलिदान के तौर पर शरीर।**

यहन्ना 6:51-56 में यीशु कहते हैं"जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लहू न पियों तुम में जीवन नहीं। यहां पर यीशु क्रूस पर अपने रहस्यमयी प्रतिनियुक्त क्रूस पर बलिदान के बारे में बात कर रहे हैं, जिसे हर व्यक्ति को "खाना" चाहिए, अर्थात अनन्त जीवन पाने के लिए विश्वास द्वारा इस्तेमाल करना चाहिए।

**( 4 ) शरीर अर्थात बाहरी रूप या मानवीय स्तर।**

यूहन्ना 8:15 में यीशु फरीसियों से कहते हैं कि "तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो"। यह पर शरीर से मनुष्य के बाहरी रूप व उसके स्तर को सम्बोधित किया जा रहा है।

---

**1:14,18**

**प्रश्न 6. हमें "परमेश्वर के इकलौते पुत्र" वाक्य से क्या समझना चाहिए?**

नोट्स।

"इकलौता पुत्र" वाक्य दर्शाता है कि यहां पर किसी सृजे गये संसार की वस्तु से जुड़ी बात नहीं हो रही है। यहां पर भूतकाल में प्रारम्भ हुई किसी बात की चर्चा नहीं की जा रही है। यह सम्बोधन मसीह के अभौतिक,सात्विक,अनन्त और त्रीएकता में पुत्र के अधीकार को प्रगट करता है।

यूहन्ना 3:16 साबित करता है कि यीशु के मानवीय रूप धारण करने से पहले ही वह परमेश्वर पिता से पैदा हुआ इकलौता पुत्र था।[5] यूहन्ना 1:18 यूनानी भाषा में लिखी प्राचीनतन हस्तपुस्तिका में (इकलौते पुत्र की बजाय) "एक मात्र उत्पन्न इकलौता पुत्र" लिखा है। क्योंकि परमेश्वर अनन्त है इसलिए जब मसीह से जुड़ा सम्बोधन अभौतिक,सात्विक,अनन्त और त्रीएकता में पुत्र के अधीकार को प्रगट करने वाला होना चाहिए। इसका अर्थ है कि अनन्तता से ही मसीह परमेश्वर का पुत्र है। आदि से ही परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा एक दूसरे की अद्‌भुत संगति का आनन्द उठा रहे हैं।

वे एक साथ मिलकर "एक ही परमेश्वर " के रूप में (मरकुस 12:29) और " परमेश्वर के एक अनोखे द्वारा" (मत्ती 29:19)विद्यमान हैं। उसका वजूद एक "आत्मा" के रूप में है (यूहन्ना 4:24; रोमियों 8:9-10)और उसके वजूद या पहिचान को किसी गणित के सूत्रों के आधार पर नहीं समझाया जा सकता। और उसकी एकमात्र सच्चे परमेश्वर ने अपने आपको पिता,पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में प्रगट किया है(मत्ती 28:19)। परमेश्वर ने प्रगट किया है कि इन तीनों के स्वभाव में भिन्नता पायी जाती है जिसे समझना मनुष्य की समझ से परे है, लेकिन हमें केवल उन बातों को मान लेना चाहिए। इस संसार के किसी भी धर्म का कोई जन परमेश्वर का नहीं जानता केवल पुत्र और जिस पर स्वयं परमेश्वर अपने आपको प्रगट करें। (मत्ती 11:25-27; यूहन्ना 10:15; 17:25-26)। इसीलिए लिखा है:"यीशु मसीह ने अपने आप को प्रगट किया"। "प्रगट किया" शब्द का अर्थ है: "प्रगट करना" "समझाया" "विस्तृत वर्णन करना"।

**कदम 4. अनुप्रयोग**

**ध्यान दें।** इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

***साझा करें व लिखें।*** आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 1:1-18 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

**ध्यान दें।** किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

**लिखें।** इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव

**1. यूहन्ना 1:1-18 से सम्भव अनुप्रयोगों की सूची।**

1:12 यीशु मसीह के बारे में केवल ज्ञान प्राप्त करना ही काफी नहीं है। उसे अपने जीवन में बुलायें और ग्रहण करें।

1:13 जो कोई यीशु मसीह को अपने जीवन में बुलाता और ग्रहण करता है वह नया जन्म पा लेता है।

1:16 लगातार मसीह के अनुग्रह की भरपूरी में जीवन व्यतीत करें।

1:17 पुराने नियम दृष्टान्त की पर दर्शायी गयी चीजों जैसे मन्दिर, रक्त बलि और सबत केवल नये नियम में आकर यीशु द्वारा प्रगट किये गये।

1:18 यीशु मसीह ने अप्रत्यक्ष परमेश्वर को हम पर प्रगट किया।

---

4.मनुएल 2,परिशिष्ट 8।"परमेश्वर व परमेश्वर के पुत्र का स्वभाव"

5.इस उत्पत्ति को हम मानवीय शक्ति से होने वाली उत्पत्ति से जोड़कर नहीं देख सकते हैं।

6.क्योंकि वह सर्वव्यापी है।

## 2. यूहन्ना 1:1-18 के आधार पर व्यक्तिगत अनुप्रयोगों या रीतियों के उदाहरण

मैं मसीहियों की इस बात को सुनिश्चित करने में सहायता करना चाहता हूँ कि उन्होंने यीशु मसीह का अपने जीवन व हृदय में स्वीकार किया हो। यूहन्ना अध्याश 1 हमें चौकस करता है कि संसार में ऐसे बहुत से लोग हैं जो अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रेम करते हैं। वे यीशु का स्वागत नहीं करते। वे यीशु को नहीं मानते वरन उसका तिरस्कार करते हैं। वे यीशु को ग्रहण न करते वरन उसे अस्वीकृत कर देते हैं। हालांकि यीशु मसीह ने यह वायदा किया है कि, जो कोई उसे ग्रहण करेगा वह उसी क्षण परमेश्वर की सन्तान बन जाएगा और धीरे वह अपने जीवन में मसीह की समानता को प्राप्त कर लेगा।

मैं अपना जीवन व्यवस्था के अनुसार नहीं वरन अनुग्रह और सत्य के द्वारा जीना चाहता हूँ। मैं ऐसे लोगों के बीच में जीवन व्यतीत करता हूँ जो सोचते हैं कि धर्म या भले काम उन्हें उद्धार प्रदान कर सकते हैं। लेकिन यूहन्ना 1 ने मुझे सिखाया कि व्यवस्था के काम मुझे क्षमा,छुटकारा और सहायता प्रदान नहीं कर सकते। लोग यीशु को अपने जीवन व हृदय में स्वीकार करने के बाद उद्धार पाते और अर्थपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

**कदम 5. प्रार्थना .** **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 1:1-18 में से परमेश्वर ने हमें जो भी एक सत्य सिखाया है उसके बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

| | | |
|---|---|---|
| **5** | **प्रार्थना** (8 मिनट) | *[ प्रतिक्रियाएं]*<br>**दूसरों के लिए प्रार्थना करें** |

**दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें। ( रोमियों 15:30; कुलु 4:12 )**

| | | |
|---|---|---|
| **6** | **तैयारी** (2 मिनट) | **[ निर्धारित कार्य ]**<br>**अगले अध्याय के लिए** |

*(समूह के अगुवे.* समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1.समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2.किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को यूहन्ना 1:1-18 के आधार पर प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं। परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **मरकुस 15:1-16:20** में से आधे अध्याय पर तथा **1 कुरिन्थियों के 1** अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

3.याद करें। **( 5 )नम्रता: फिलिप्पियों 2:3-4।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

4.बाइबल अध्ययन। घर पर ही अगली बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। यूहन्ना 1:1-18। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6.मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।